मजबूत डॉलर से टायर-ट्यूब इंडस्ट्री पर दोहरी मार

निर्यात में 25 फीसदी की गिरावट, महंगे डॉलर से आयातित कच्चा माल भी महंगा

बिजनेस भास्कर • लुधियाना

साइकिल टायर-ट्यूब निर्माता कंपनियों पर डॉलर की मजबूती भारी पड़ रही है। डॉलर की मजबूती से महंगे पड़ रहे टायर-ट्यूब की मांग अंतरराष्ट्रीय बाजार में लगातार घट रही है जिससे यहां की टायर-ट्यूब इंडस्ट्री का निर्यात 20 से 25 फीसदी तक कम हो गया है।

यही नहीं, डॉलर की मजबूती के चलते केमिकल एवं कार्बन की कीमतों में भी 8 से 10 फीसदी तक की बढ़ोतरी हो गई है लेकिन मांग कम होने के चलते इंडस्ट्री उत्पादों की कीमतों में बढ़ोतरी नहीं कर पा रही है। इससे इंडस्ट्री पर दोतरफा मार पड़ रही है।राल्सन टायर के एमडी संजीव पाहवा के मुताबिक लुधियाना से साइकिलों का टायर-ट्यूब अफ्रीकी देशों, मध्यपूर्वी और सार्क देशों में निर्यात हो रहा है। बीते तीन माह से डॉलर लगातार मजबूत हो रहा है जो 45 रुपये से बढ़कर अब 52.95 रुपये तक पहुंच गया है। इसका नतीजा यह है कि इन देशों से मिलने वाले आर्डरों में भी कमी आई है। वित्त वर्ष 2011-12 की तीसरी तिमाही से टायर-ट्यूब की अंतरराष्ट्रीय बाजार में मांग 20 से 25 फीसदी तक घटी है। वे तमाम देशों में हर साल करीब 100 करोड़ रुपये का साइकिल टायर-ट्यूब निर्यात करते आ रहे हैं। लेकिन इस बार इस निर्यात में कमी रहने की आशंका है।

मांग क्यों घटी

- **डॉलर** ₹53.21 होने से विदेशी आर्डरों में कमी आई
- **तीसरी** तिमाही से टायर-ट्यूब की अंतरराष्ट्रीय बाजार में मांग लगातार घट रही है
- **केमिकल** और कार्बन महंगा होने से भी इस इंडस्ट्री की परेशानी बढ़ी

गोबिंद रबड़ के सह निदेशक अनिल गुप्ता के मुताबिक साइकिल ट्यूब की कीमतें बीते साल भी बढ़ी लागतों के चलते बढ़ाई गई थीं क्योंकि तब रबड़ की कीमतें बढ़ गई थीं। निर्यात में इस चालू वित्त वर्ष में करीब 15% कमी रहने की आशंका है। उनकी कंपनी हर माह करीब पांच लाख टायर-ट्यूब का निर्यात कर रही है जिसमें पिछले कुछ समय में गिरावट दर्ज की गई है। इंडस्ट्री को श्रमिकों की भारी किल्लत महसूस हो रही है जिसकी वजह से श्रम के रेट लगातार बढ़ रहे हैं।

गंगोत्री रबड़ के एमडी विनोद बंसल के मुताबिक वे सीधे निर्यात नहीं करते हैं लेकिन जिन ट्रेडर्स के जरिए निर्यात हो रहा है उनकी मांग काफी घट गई है। दूसरी ओर इंडस्ट्री की लागत भी 7 से 10 फीसदी तक बढ़ गई हैं। डॉलर मजबूत होने के चलते आयातित केमिकल और कार्बन के भी दाम बढ़ गए हैं।